रुहु को रुहु से होता है प्यार
सुप्रीम रुहु करती हम रुहु से प्यार
अविनाशी प्यार देता है सुख अपार
आत्मा अविनाशी परमात्मा अविनाशी
करते एक दूजे से अविनाशी प्यार
कल्प कल्प रहती आत्मा पर
 इसकी अमिट अविनाशी छाप
देह के सब प्यार झूठे बहुत रुलाते
विनाशी मिट्टी है मिट्टी में मिल जाते
देह अभिमान है बहुत सताते
 व्यक्ति वैभव वस्तु सब विनाशी
करो न इसमें समय की बरबादी
दुखो की है यह दुनिया रोने वाली
कलयुग अंत है डलनी सम्पूर्ण आहुति
सतयुग है हंसने की खुशियों की
दुनिया ,आत्मा रहती आत्मभिमानी
मृत्यु का वहां न कोई गम
हेल्थ वेल्थ हैप्पीनेस नही कम
सुखों की हर दिन बरसात होती
घर घर होती दिवाली और खुशहाली
आया शांति का सागर देने अविनाशी
 लाटरी ...फर्स्ट क्लास की बादशाही
छोडो थर्ड क्लास की आसुरी लाटरी
आत्मा समझ परमात्मा से योग लगाओ

सुख समृधि शांति शक्ति का वरसा पाओ

ॐ शांति